# श्री हनुमान चालिसा

## दोहा

**श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।**
**बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥**

बुद्धिहिन तनु जानकै, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

## चौपाई

**जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।**
**जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥**

रामदुत अतुलित बल धामा ।
अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥

**महावीर विक्रम बजरंगी ।**
**कुमति निवार सुमतिके संगी ॥**

कंचन वरन विराज सुवेसा ।
कानन कुण्डल कुँचित केसा ॥

**हाथ बज्रऔ ध्वजा विराजे ।**
**काँधे मुँज जनेउ साजै ॥**

शंकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥

**विद्यावान गुनी अति चातुर ।**
**राम काज करिवे को आतुर ॥**

प्रभु चरित्रे सुनिवे को रसीया ।
राम लखन सीता मन वसीया ॥

**सूक्ष्म रुप धरि सियंहि दिखावा ।**
**विकट रुप धरि लंक जरावा ॥**

भीम रुप धरि असुर सँहारे ।
रामचन्द्रके काज सँवारे ॥

**लाय सजिवन लखन जियाए ।**
**श्री रघुविर हरषि उर लाए ॥**

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई ।
तुम मम प्रिय भरत हि सम भाई ॥

**सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।**
**अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥**

सनकादिक ब्रम्हादि मुनिसा ।
नारद सारद संहित अहीसा ॥

**जम कुवेर दिगपाल जहाँ ते ।**
**कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥**

तुम उपकार सुग्रीबहिं किन्हा ।
राम मिलाय राजपद दिन्हा ॥

**तुम्हरो मन्त्र विभिषण माना ।**
**लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥**

जुग जहस्त्र जोजन पर भानू ।
लिल्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

**प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।**
**जलधि लाँघी गए अचरज नाहीं ॥**

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

**राम दुआरे तुम रखवारे ।**
**होत न आज्ञा विनु पैसारे ॥**

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहुको डर ना ॥

**आपन तेज सम्हारो आपै ।**
**तिनो लोक हाँक ते काँपै ॥**

भुत पिसाच निकट नहि आवै ।
महाविर जब नाम सुनावै ॥

**नासै रोग हरै सब पीडा ।**
**जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥**

संकट ते हनुमान छुडावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥

**सब पर राम तपस्वी राजा ।**
**तिनके काज सकल तुम सजा ॥**

और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

**चारो जुग प्रताप तुम्हारा ।**
**है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥**

साधु संतके तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥

**अष्ट सिद्धि नौ निधिके दाता ।**
**अस वर दीन जानकी माता ॥**

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपतिके दासा ॥

**तुम्हरे भजन रामको पावै ।**
**जन्म जन्मके दुःख विसरावै ॥**

अन्तकाल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

**और देवता चित्त न धरई ।**
**हनुमत्त सेइ सर्व सुख करई ॥**

संकट कटै मिटै सब पिडा ।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥

**जय जय जय हनुमान गोसाईं ।**
**कृपा करहु गुरु देवकी नाई ॥**

जो सत वार पाठ कर कोइ ।
छुटहि बन्दी महा सुख होई ॥

**जो यह पदै हनुमान चालिसा ।**
**होय सिद्धि साखी गौरिसा ॥**

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
किजै नाथ हृदय मह डेरा ॥

## दोहा

**पवन तनय संकट हरन, मंगल मूर्ति रुप ।**
**राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥**

## मन्त्र

ॐ नमो: हनुमते भए भंजनाए सुखम् कुरु फट स्वाहा !

## प्रार्थना

**कवन सो काज कठिन जग माहि, जो नहि होइ तात तुम्ह पाही !**

**सीयावर रामचन्द्रकी जय !**

**पवनसुत हनुमानकी जय !!**